



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC - CPO

DELHI POLICE SI & CAPF

भाग - 2

सामान्य जागरूकता (GK) + विविध

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “SSC CPO (DELHI POLICE SI & CAPF)” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को कर्मचारी चयन आयोग (SSC), द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “SSC CPO (DELHI POLICE SI & CAPF)” भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

Online Order at → <https://bit.ly/ssc-cpo-notes>

Whatsapp Link - <https://wa.link/ij0u1e>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

प्राचीन भारत का इतिहास

1. सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2. वैदिक काल	4
3. बौद्ध धर्म, जैन धर्म, एवं शैव धर्म	9
4. महाजनपद काल	14
5. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल	16
6. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल	20
7. कुषाण वंश एवं सातवाहन राजवंश	23

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्धु पर आक्रमण	25
2. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश	27
3. भक्ति एवं सूफी आंदोलन	38
4. बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	42
5. मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.)	45

आधुनिक भारत का इतिहास

1. यूरोपीय कम्पनियों का आगमन	54
2. मराठा साम्राज्य	60
3. अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	63
4. 1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन	71
5. भारत में राष्ट्रीय जागरण या आंदोलन	76
6. गाँधी युग और असहयोग आंदोलन	80
7. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	86
8. पड़ोसी देशों से भारत के संबंध	90

भारतीय संस्कृति

1. भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक	93
2. भारतीय चित्रकला	96
3. भारतीय नृत्य कलाएँ	97
4. मुगलकालीन प्रमुख इमारतें	100

भारत का भूगोल

1. सामान्य परिचय	104
2. भौतिक विभाजन	107
3. नदियाँ एवं झीलें	113
4. जलवायु	120
5. कृषि (agriculture)	121
6. मृदा / मिट्टी	130
7. प्राकृतिक वनस्पतियाँ	132
8. प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	135
9. उद्योग (Industry)	140
10. परिवहन तंत्र	145

विश्व भूगोल

150 - 169

- ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल
- महाद्वीप एवं महत्वपूर्ण स्थान
- पर्वत (Mountains) एवं पठार
- विश्व के प्रमुख महासागर और सागर

अर्थशास्त्र

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ	170
2. राष्ट्रीय आय और उत्पाद	171
3. मुद्रा एवं बैंकिंग	173
4. बजट एवं बजट निर्माण	176
5. कर TAX	178
6. केंद्र सरकार की योजनाएँ	179
7. गरीबी एवं बेरोजगारी	184

संविधान

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	186
2. संविधान सभा	189
3. संविधान की विशेषताएं	191
4. संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र	194
5. भारतीय नागरिकता	195
6. मौलिक अधिकार	197
7. नीति निर्देशक तत्व	200
8. राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	202
9. भारतीय संसद (विधायिका)	206
10. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	213

11. उच्चतम न्यायालय	214
12. राज्य कार्यपालिका	216
13. मुख्यमंत्री, राज्य महाधिवक्ता, राज्य विधानमण्डल	218
14. उच्च न्यायालय	224
15. पंचायती राज	228
16. निर्वाचन आयोग	233
17. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	234
18. नीति आयोग	235
19. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	237
20. संविधान संशोधन	238

विविध

239 - 243

- महत्वपूर्ण दिवस
- विश्व के प्रमुख देश, राजधानी एवं उनकी मुद्राओं की सूची:
- पुस्तक एवं लेखक
- भारत में सर्वाधिक बड़ा, लम्बा एवं ऊँचा
- विश्व में सबसे बड़ा छोटा, लम्बा तथा ऊँचा
- भारत में प्रथम पुरुष
- भारत में प्रथम महिला
- भारत का निम्न क्षेत्रों में प्रथम एवं द्वितीय स्थान
- भारत में प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मानित व्यक्ति

- विश्व के प्रमुख संगठन और उनके मुख्यालय
- भारत के प्रमुख संस्थान एवं उनके मुख्यालय
- आविष्कार-आविष्कारक
- भारत के प्रमुख खेल
- राष्ट्रीय खेल पुरस्कार
- भारत में विश्व धरोहर स्थल
- भारत के राजकीय पशु पक्षी, वृक्ष और फूल की सूची
- केंद्र शासित प्रदेश और उनकी राजधानियों की सूची
- पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय - 1

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानते हैं।
- **सैंधव सभ्यता**- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- **सिन्धु सभ्यता** - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया।
- **वृहत्तर सिन्धु सभ्यता** - ए. आर-मुगल के द्वारा कहा।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- हड़प्पा नामक पुरास्थल सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बद्ध है।
- 20 सितम्बर 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी

- **भूमध्यसागरीय** - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
- **मंगोलियन** - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है।
- **अल्पाइन प्रजाति**।

सिन्धु सभ्यता की तिथि

- कार्बन 14 (C¹⁴) - 2500 से 1750 ई.पू.
- हिलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

सुत्कांगेडोर- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज औरैल स्ट्राइन ने की थी।

- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा**- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बनावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** - कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा
रोपड़ (स्पनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
चिनाब नदी के किनारे
सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल
तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
सभ्यता का पूर्वी स्थल
- माण्डी
- बड़गाँव
- हलास
- सनौली

● गुजरात

धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदिख्वी, तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार

● महाराष्ट्र - देमाबाद

सभ्यता की दक्षिणतम सीमा

फैलाव - त्रिभुजाकार

क्षेत्रफल - 1299600 वर्ग किलोमीटर

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

● हड़प्पा

रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी। खोज - वर्ष 1921 में उत्खनन-

- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीयर हीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम हीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्वपूर्ण हैं।

मोहनजोदड़ों

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
- मार्शल
- जे.एच. मैके
- जे.एफ. डेल्स

● मोहनजोदड़ों का नगर कच्ची ईंटों के चबूतरों पर निर्मित था।

- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला मोहनजोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला है।
- मूर्ति पूजा का आरम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ है।

कालीबंगा-

- कालीबंगा की खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में की गयी थी।
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है।
- उत्खनन - बी.बी लाल, वी. के. थापड़ 1953 में
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- कालीबंगा से एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है।
- सड़कों को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।

भारवि

- 'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के वन पर्व पर आधारित है इसमें कुल 18 सर्ग हैं।

भट्टि

- इनके द्वारा रचित 'भट्टिकाव्य' को 'रावणवध' भी कहा जाता है। यह रामायण की कथा पर आधारित
- इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

अध्याय - 7

कुषाण वंश एवं सातवाहन राजवंश

कुषाण वंश

- मौर्योत्तरकालीन विदेशी आक्रमणकारियों में कुषाण वंश सबसे महत्वपूर्ण हैं। पल्लवों के बाद भारतीय क्षेत्र में कुषाण आये जिन्हें युची और तोखरी भी कहा जाता है।
- कुषाणों ने सर्व प्रथम बैक्ट्रिया और उत्तरी अफगानिस्तान पर अपना शासन स्थापित किया।
- कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था।
- इसने तांबे का सिक्का चलाया था। सिक्कों के एक भाग पर यवन शासक हर्मियस का नाम उल्लेखित है तथा दूसरे भाग पर कुजुल का नाम खरोष्ठी लिपि में खुदा हुआ है।
- कुजुल कडफिसेस के बाद विम कडफिसेस शासक बना जिसने सर्वप्रथम सोने का सिक्का जारी किया। इसके अतिरिक्त कुषाणों ने प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाने के साथ ही उत्तरी पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में तांबे के सिक्के भी जारी किये।
- इसके सिक्कों पर शिव नंदी तथा त्रिशूल की आकृति एवं महेश्वर की उपाधि उत्कीर्ण हैं।
- विम कडफिसेस के बाद कनिष्क ने कुषाण साम्राज्य की सत्ता संभाली कनिष्क कुषाण वंश का महानतम शासक था। इसके कार्य काल का आरम्भ 78 ई. माना जाता है। क्योंकि इसी ने 78 ई. में शक संवत् आरम्भ किया।
- उसने कश्मीर को विजित कर वहां कनिष्कपुर नामक नगर बसाया।
- कनिष्क बौद्ध धर्म की महायान शाखा का संरक्षक था। इसके सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है।
- कनिष्क ने कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया।
- उसका उत्तराधिकारी हुविष्क था। हुविष्क के पश्चात् कनिष्क द्वितीय शासक बना जिसने सीजर की उपाधि ग्रहण की।
- कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था। जिसने अपना नाम भारतीय पर रख लिया। इसके सिक्को पर शिव के साथ गज की आकृति मिली है।
- कनिष्क के सारनाथ बौद्ध अभिलेख की तिथि 81 ई. सन् है। यह इसके राज्यारोहण के तीसरे वर्ष स्थापित की गई थी।

कुजुल कडफिसेस

- **मुख्य लेख : कुजुल कडफिसेस**
- कुषाणों के एक सरदार का नाम कुजुल कडफिसेस था। उसने काबुल और कंधार पर अधिकार कर लिया।
- मथुरा में इस शासक के तांबे के कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं।

विम कडफिसेस

- **मुख्य लेख : विम कडफिसेस**
- विम तक्षम लगभग 60 ई. से 105 ई. के समय में शासक हुआ होगा।

कनिष्क

- **मुख्य लेख : कनिष्क**
- कनिष्क कुषाण वंश का सबसे प्रमुख या प्रसिद्ध सम्राट था। भारतीय इतिहास में अपनी विजय, धार्मिक प्रवृत्ति, साहित्य तथा कला का प्रेमी होने के नाते विशेष स्थान रखता है।
- कनिष्क की कश्मीर विजय का उल्लेख राजतरंगिणी नामक ग्रन्थ में मिलता है। कश्मीर में कनिष्कपुर नामक नगर को कनिष्क ने बसाया।
- कनिष्क के दरबार में महान दार्शनिक एवं वैज्ञानिक नागार्जुन की तुलना मार्टिन लूथर से की जाती है।
- नागार्जुन को भारत का आइन्स्टाइन कहा जाता है। नागार्जुन ने अपनी पुस्तक 'माध्यमिक सूत्र' में सापेक्षता के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है।
- शून्यवाद के व्याख्याकार नागार्जुन थे।
- कनिष्क के राजवेद आयुर्वेद के महापण्डित चरक थे। चरक ने औषधि पर चरकसहिता नामक ग्रन्थ की रचना की।
- बौद्ध धर्म के विश्वकोष 'महाविभासुत्र' की रचना वसुमित्र ने की थी।
- कनिष्क के युग में गंधार कला, सरनाथ कला, मथुरा कला, तथा अमरावती कला का विकास हुआ। गंधार शैली में बौद्ध मूर्तियों का निर्माण हुआ था।
- रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। कुषाण साम्राज्य में मार्गों पर सुरक्षा का प्रबंध था। रेशम मार्ग का आरम्भ कनिष्क ने करवाया था।
- कुषाण काल में सबसे अधिक विकास वास्तु कला के क्षेत्र में हुआ था। इसी काल में बुद्ध की खड़ी प्रतिमा का निर्माण हुआ था।

कनिष्क के शासन काल के विद्वान

1	अश्वघोष	कवि / साहित्यकार
2	नागार्जुन	दार्शनिक वैज्ञानिक
3	चरक	चिकित्सक
4	वसुमित्र	बौद्ध / साहित्यकार

कनिष्क के शासनकाल में लिखीत पुस्तकें

क्र.स.	पुस्तकें	लेखक
1	बुद्धचरित	अश्वघोष
2	सुत्रालंकार	अश्वघोष
3	सौन्दरानन्द	अश्वघोष
4	माध्यमिकसूत्र	नागार्जुन
5	महाविभाषसूत्र	वसुमित्र
6	चरकसहिता	चरक

सातवाहन राजवंश

- 'सातवाहन' शब्द का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में है। इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं। कथा सरितसागर में 'सात' नामक यक्ष पर चढ़ने वाले को सातवाहन कहा गया है।
- यूनानी यात्री मेगस्थनीज के अनुसार (जो स्वयं चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा) भारत मौर्यों के बाद उस समय सबसे बड़ी सेना आन्ध्रों की ही थी और

आन्ध्र-सातवाहन वंश के शासक

शिमुक

- पुराणों के प्रमाण के अनुसार 28 ई.पू. शिमुक (या शिमुक या सिन्धुक) नामक आन्ध्र ने (जो सम्भवतः कण्व शक्ति का नायक या सेनापति था) ने कण्व वंश के अन्तिम राजा सुशर्मन की हत्या करके सत्ता हथिया ली।

कृष्ण

- पुराणों के अनुसार शिमुक का उत्तराधिकारी उसका भाई कृष्ण (कन्ह) था जिसने 18 वर्ष तक राज किया। नासिक में मिले एक शिलालेख में उसका नाम मिलता है।

- अपनी राजधानी विजयनगर के निकट नागलापुर नामक नगर की स्थापना की।
- डोमिंगो पायस और बारबोसा नामक पुर्तगाली यात्री इन्हीं के शासनकाल में भारत आये थे।
- कृष्ण देवराय ने बंजर और जंगली भूमि को कृषि योग्य बनाने की कोशिश की।
- उन्होंने विवाह कर जैसे अलोकप्रिय करों को समाप्त किया। उन्होंने हजारा राम मंदिर तथा विठ्ठल स्वामी के मंदिर का निर्माण कराया।

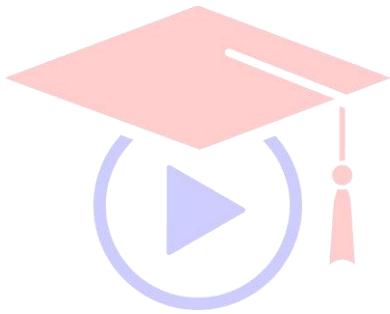
अध्याय - 5

मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.)

बाबर से औरंगजेब तक

बाबर (1526 - 1530 ई.)

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
 - लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
 - बाबर ने मुगल साम्राज्य और मुगल सल्तनत की नींव रखी।
 - मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
 - बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना' में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
 - बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।
 - पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
 - खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
 - चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
 - घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- नोट** - पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था।
- उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे। जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।



- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी।
- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उल्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए' उस्मानी विधि जिसे 'रुमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को 'सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।
- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था।
- खानवा विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाली की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिए अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।
- खानवा के युद्ध में मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध' लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुके बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।
- बाबरनामा में बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है। जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्हीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है। साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं में वाइ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी' भी कहा जाता है।
- बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।
- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग-' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है। यही पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।
- बाबर को मुबइयान नामक पद्य शैली का जन्म दाता माना जाता है।
- बाबर को उदारता के कारण कलन्दर की उपाधि दी गयी थी।
- बाबर प्रसिद्ध नक्शबंदी सूफी ख्वाजा उबेदुल्ला अरहार का अनुयायी था।
- बाबर के चार पुत्र हिन्दाल, कामरान, अस्करी और हुमायूँ थे। जिनमें हुमायूँ सबसे बड़ा था फलस्वरूप बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ अगला मुगल शासक बना।
- पित्रादुरा तकनीक का प्रयोग एत्मादुद्दौला के मकबरे में हुआ है जो ईरानी शैली का है।

हुमायूँ (1530 ई-1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुगल वंश के शासन (गद्दी) पर बैठा।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।

- दीनबन्धु मित्र का नाटक नील दर्पण में नील की खेती करने वाले पर हुए आत्याचार का उल्लेख करता है ।
- आत्मसम्मान आंदोलन की शुरुआत रामस्वामी नायकर ने की थी ।
- तरुण स्त्री सभा की स्थापना कलकत्ता में की गयी थी ।
- देव समाज के संस्थापक शिव नारायण अग्निहोत्री थे ।
- भारत भारतीयों के लिए है यह नारा आर्य समाज ने दिया था ।
- सबसे कम उम्र में फांसी की सजा पाने वाला खुदीराम बोस था ।
- भारत का बिस्मार्क सरदार वल्लभ भाई पटेल को कहा जाता है ।
- शुद्धि आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे ।
- मुहम्मद अली एवं शोकत अली ने 1919 में खिलाफत आंदोलन की शुरुआत की ।
- आर्य महिला सभा की स्थापना पंडिता रमाबाई ने की थी ।
- कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयबजी थे ।
- सुभाष चन्द्र बोस को सर्वप्रथम नेताजी एडोल्फ हिटलर ने कहा था ।
- महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता कहकर संबोधित सुभाषचन्द्र बोस ने किया ।
- द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस विजयलक्ष्मी पंडित थी । इंडिया टुडे पुस्तक की लेखक रजनी पाम दत्त थी ।

अध्याय - 7

क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी।
- वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर तिलक के पत्र 'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नाथ' की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1930 में बंगाल में विनय, बादल एवं दिनेश नामक क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसी तरह सूर्यसेन) मास्टर दा (ने चटगांव शस्त्रागार पर नियंत्रण स्थापित किया ।
- भगत सिंह ने 1925 में 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसने भारतीयों को समाजवादी विचारधारा के माध्यम से क्रान्ति की ओर प्रेरित किया।
- पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अजीत सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जब अजीत सिंह को पंजाब से निर्वासित किया गया तो वह फ्रांस पहुंचकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने लगे।
- दिल्ली में 1912 में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका गया। इस घटना में रास बिहारी बोस की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- संयुक्त प्रांत में 9 अगस्त 1925 में लखनऊ के पास काकोरी ट्रेन डकैती की गयी और सरकारी खजाने को लूटा गया। इस काकोरी षड्यंत्र मुकदमे के तहत राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी एवं अशफाक उल्ला खां को फांसी दे दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद भी इस घटना में, शामिल थे किन्तु वे फरार होने में सफल रहे ।
- 1928 में दिल्ली में फिरोजशाह कोटला मैदान में क्रांतिकारियों की बैठक हुई जिसमें भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी शामिल थे। इस बैठक में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन CHSRAJ कर दिया गया।

- रास बिहारी घोष - उदारवादी
- रास बिहारी बोस- क्रांतिकारी
- स्वदेशी आंदोलन में किसानों की भागीदारी नहीं थी।
- ब्रह्म समाज -1828
- आर्य समाज 1875
- रामकृष्ण मिशन -1897
- **विदेश में प्रसार**
- लंदन में 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 'इंडिया होमरूल सोसाइटी' की स्थापना की जिसका लक्ष्य भारत के लिए स्वराज की प्राप्ति करना था। इसकी स्थापना ब्रिटिश समाजवादी नेता 'हीडमैन' के सुझाव पर की गई है। इसके उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।
- श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की जो क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र बना। यह विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अपनी भूमिका निभाता था। सरकारी दमन के कारण श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन छोड़ना पड़ा और वे पेरिस चले गए। तत्पश्चात् इंडिया हाउस का कार्यभार वी.डी. सावरकर ने संभाला।
- वी.डी. सावरकर ने 1857 का 'स्वतंत्रता संग्राम' नामक पुस्तक की रचना की और मेजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद किया।
- इसी इंडिया हाउस से जुड़े हुए मदन लाल ढींगरा भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार 'वाइली' की 1909 में गोली मारकर हत्या कर दी।
- फ्रांस में श्रीमती भीखा जी कामा ने पेरिस में क्रांतिकारी विचारों का प्रसार किया। इन्होंने वंदे मातरम नामक पत्र का संपादन किया। इन्हें क्रांतिकारियों की माता कहा जाता है।
- अमेरिका-1913 अमेरिका के पोर्ट लैंड में 'हिंद एसोशिएशन' की स्थापना नामक पत्रिका का प्रकाशन गुजराती और उर्दू में किया था।
- गदर पार्टी की स्थापना अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में हुई। जिसमें सोहन सिंह भावना, लाला हरदयाल भाई परमानंद की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- गदर पार्टी के अध्यक्ष भावना एवं महासचिव लाला हरदयाल थे तथा कोषाध्यक्ष काशीराम थे।
- गदर पार्टी धर्मनिरपेक्ष स्वरूप से युक्त थी।

- गदर पार्टी के सदस्य करतार सिंह सराभा के वीरता एवं बलिदान से भगत सिंह अत्यधिक प्रभावित थे।
- गदर आंदोलन ने कामागाटामारु जहाज विवाद में भारतीयों का समर्थन किया।
- कामागा टामारु जहाज विवाद 1914 में हुआ था।
- **अफगानिस्तान-1915** में राजा महेन्द्र प्रताप एवं बरकतुल्ला तथा ओबैदुल्ला सिंधी के प्रयासों से काबुल में भारत की पहली स्वतंत्र एवं अस्थायी सरकार की स्थापना की गयी जिसमें महेन्द्र प्रताप राष्ट्रपति और बरकतुल्ला प्रधानमंत्री बने।

होमरूल लीग आंदोलन (1916)

- एनी बेसेन्ट और तिलक ने 1916 में होमरूल लीग की स्थापना की। इसका गठन आयरलैंड के होमरूल लीग के आधार पर किया गया।
- जून-1914 में तिलक जेल से रिहा हुए।
- तिलक ने अप्रैल 1916 में बेलगाँव में होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी शाखाएँ (महाराष्ट्र) बॉम्बे को छोड़कर, कर्नाटक, मध्यप्रान्त एवं बरार में स्थापित थी।
- एनी बेसेन्ट ने सितम्बर -1916 में मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी शाखाएँ तिलक द्वारा स्थापित किए गए क्षेत्रों को छोड़कर पूरे भारत में भी जिनकी संख्या 200 थी और इसके सचिव 'जार्ज अरुण्डेल' थे।
- होमरूल लीग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनमानस को स्वशासन के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराना था।
- तिलक और बेसेन्ट के प्रयासों से 1916 में लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस के नरमदल एवं गरमदल के बीच समझौता हुआ।

1945 -1947 के बीच का भारत:

- वैंवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा -नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह -फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन - मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा -20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना -3 जून 1947

- **वैवल योजना - (1945)** वायसराय वैवल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वैवल योजना के नाम से जाना जाता है।
- इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1945 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।
- वैवल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए :
 - वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद् में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।
 - वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।
 - इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
 - दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों -मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।
 - कांग्रेस ने जिन्ना के मन को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता। इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती है।

आजाद हिन्द फौज) भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA)

:- INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।

- जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था।
- मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्य अधिकारी थे
- 1 सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पहुंचे और वहां से उन्होंने "दिल्ली चलो" का नारा दिया।

- क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने सुभाष चन्द्र बोस को सहयोग दिया।
- अतः सुभाष चन्द्र बोस ने 21 अक्टूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया।
- आजाद हिंद फौज का मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून, म्यांमार, में भी बनाया गया।
- बोस की सरकार ने UK और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गांधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया
- सुभाष चन्द्र बोस ने महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया।

लाल किला मुकदमा (नवम्बर 1945):

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया।
- फौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह दिल्ली एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एक आजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे।
- नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलों जैसे -कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था।
- आजाद हिंद सप्ताह) 11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा 12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।
- आजाद हिंद फौज के कैंपन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

शाही भारतीय नौसेना विद्रोह 18 फरवरी 1946 को हुआ था।

- हड़ताली नाविकों ने केंद्रीय नौसेना हड़ताल समिति का गठन किया जिसके प्रमुख एम.एस. खान थे।
- विद्रोह का प्रसार बाम्बे, कोलाबा)महाराष्ट्र(, कराँची, कलकत्ता, जबलपुर दिल्ली, अम्बाला, जालंधर आदि स्थानों पर फैला।

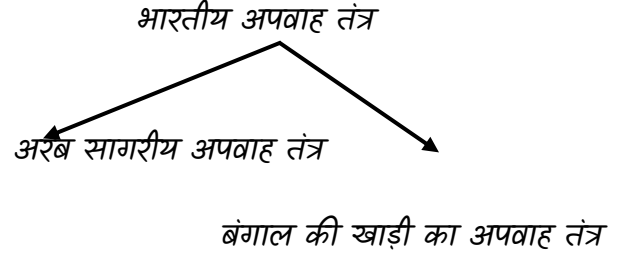
तटवर्ती मैदान

- भारत में तटीय मैदान पश्चिम घाट के पश्चिम तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं।
- यह तटों के सहारे- सहारे कच्छ की खाड़ी से लेकर पश्चिम बंगाल तक स्थित हैं।
- भारत के तटीय मैदान लगभग 6000 km. की दूरी में स्थित हैं इनका निर्माण नदियों के द्वारा किया गया है।
- पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता है।
- पूर्वी घाट का अधिक चौड़ा होने का कारण नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण करना है।
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं।
- मालाबार तट पर लैगून झील पाए जाते हैं जिन्हें कयाल कहते हैं।
- पूर्वी तटीय मैदान कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित हैं।
- तटीय मैदान को 2 भागों में विभाजित किया जा सकता है।
- पश्चिमी तटीय मैदान
- पूर्वी तटीय मैदान
- पश्चिमी तटीय मैदान में शामिल मैदान हैं
 - (a) गुजरात का तटीय मैदान
 - (b) कोंकण का तटीय मैदान
 - (c) कर्नाटक का तटीय मैदान
 - (d) मालाबार का तटीय मैदान
- 1. पूर्वी तटीय मैदान में शामिल मैदान हैं
 - a. उत्कल (ओड़िशा) का तटीय मैदान
 - b. आंध्र का तटीय मैदान
 - c. तमिलनाडु का तटीय मैदान
 - d. पश्चिमी तटीय मैदान

अध्याय - 3

नदियाँ एवं झीलें

नदियाँ



- **अपवाह तंत्र** किसी नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को कहते हैं।
- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं। बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं। अपना जल अरब सागर में गिराती हैं।


हिमालयी अपवाह तंत्र

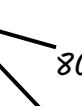
- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं।
- इन्हीं नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- **इंडो ब्रह्म नदी:-** भू-वैज्ञानिक मानते हैं, कि मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी। जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्म नदी कहा गया है।
- इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -
- 1. पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
- 2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
- 3. पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

भारतीय नदी प्रणाली

1. सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु जल संधि 1960 में हुई थी।
- तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत के पास है।
- तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया है।

1. व्यास, रावी, सतलुज  80% पानी भारत
20% पानी पाकिस्तान

2. सिन्धु, झेलम, चिनाब  80% पानी पाकिस्तान
20% पानी भारत

सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं।
- भारत में सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं।
- सिन्धु नदी की कुल लम्बाई 2,880 किमी. हैं।
- भारत में सिन्धु नदी की लम्बाई केवल 1,114 km हैं।
- भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित है। तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं।
- **सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।**
- अन्य सहायक नदियाँ - जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल।
- सिन्धु नदी, कराची (पाकिस्तान) के निकट अरब सागर में जाकर गिरती है।
- यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है। जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती है।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है।

- पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है।
- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार है।
- तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, हांगहो (पीली नदी, पीत), इरावदी, मेकांग एवं सतलज।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता है।
- यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती है। तथा कठोर चट्टानी भागों से होकर बहती है।
- यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती है।

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी है।
- यह तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर झील के निकट राक्षस ताल झील से निकलती है।
- वहाँ इसे लाँगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है।
- सतलज नदी का संगम स्थल कपूरथला के द.- प. सिरे पर व्यास नदी में तथा मिठानकोट के निकट सिन्धु नदी में है।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंडो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती है।
- सतलज नदी की सहायक नदियाँ हैं -सिप्ती, वास्या, व्यास
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती है।
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है। यह भाखड़ा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती है तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती है।
- **व्यास नदी (विपाशा नदी) :-**
- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है।
- यह रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती है।

- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है।
- यह धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड का निर्माण करती है।
- यह हरिके बेराज के पास सतलज नदी में जाकर मिल जाती है।
- पार्वती, सैन्ज, तीर्थन, ऊहल इसकी सहायक नदियाँ हैं।

रावी नदी (परुष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिन्धु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है।
- जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती है तथा चंबा घाटी से होकर बहती है।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती है।
- अंत में ये झांग जिले की सीमा पर चिनाब नदी में मिल जाती है।

चिनाब नदी (अस्किनी)

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है।
- यह लाहुल में बरालाचाला दर्रे के विपरीत दिशा में चंद्रा और भाग नामक दो सरिताओं के मिलने से बनती है।
- ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांडी में आपस में मिलती हैं।
- इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1180 किमी है।
- यह त्रिमू के निकट झेलम नदी में जाकर मिलती है।

झेलम नदी (वितस्ता)

- यह सिन्धु की सहायक नदी है।
- जो कश्मीर घाटी के दक्षिण-पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती है।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखण्ड से गुजरती है।
- पाकिस्तान में झंग के निकट यह चिनाब नदी से मिलती है।

गंगा नदी तंत्र

➤ गंगा नदी

- गंगा नदी का उद्गम उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले में गोमुख के निकट गंगोत्री हिमनद से हुआ है। जहाँ यह भागीरथी के नाम से जानी जाती है।
- गंगा नदी की कुल लम्बाई 2525 किलोमीटर (उत्तराखंड) में 110 किलोमीटर उत्तरप्रदेश में 1450 किलोमीटर तथा बिहार में 445 km व पश्चिम बंगाल में 520 किलोमीटर) हैं।
- उत्तराखंड में देवप्रयाग में भागीरथी, अलकनंदा नदी से मिलती है तथा इसके बाद यह गंगा कहलाती है।
- अलकनंदा नदी का स्रोत बद्रीनाथ के ऊपर सतोपथ हिमनद से हुआ है।
- अलकनंदा, धौली गंगा और विष्णु गंगा धाराओं से मिलकर बनती है, जो जोशीमठ या विष्णु प्रयाग में मिलती है।
- भागीरथी से देव प्रयाग में मिलने से पहले अलकनंदा से कई सहायक नदियाँ आकर मिलती हैं।

स्थान

विष्णु प्रयाग
नंद प्रयाग
कर्ण प्रयाग
रूद्रप्रयाग
देवप्रयाग

नदी संगम

धौलीगंगा + अलकनंदा
मंदाकिनी + अलकनंदा
पिंडार + अलकनंदा
मंदाकिनी + अलकनंदा
भागीरथी + अलकनंदा

- गंगा नदी हरिद्वार (उत्तराखंड) के बाद मैदानी क्षेत्रों में प्रवेश करती है तथा अपने दक्षिण पूर्व में बहते हुए इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में पहुँचती है जहाँ इससे यमुना नदी (गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी) आकर मिलती है।
- इसके बाद यह बिहार व पश्चिम बंगाल में प्रवेश करती है। पश्चिम बंगाल में यह दो वितरिकाओं (धाराओं) में विभाजित हो जाती है। एक धारा हुगली नदी कहलाती है जो कलकत्ता में चली जाती है तथा मुख्य धारा पश्चिम बंगाल बहती हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है।
- बांग्लादेश में प्रवेश करने के बाद इससे ब्रह्मपुत्र नदी आकर मिलती है इसके बाद यह पद्मा के नाम से जानी जाने लगती है।
- अन्त में यह बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है।

भारत की प्रमुख झीलें

झील	सम्बन्धित राज्य
वेम्बनाड	केरल
अष्टमुडी	केरल
पेरियार	केरल
हुसैन सागर	तेलंगाना
राकसताल	उत्तराखंड
देवताल	उत्तराखंड
स्पकुंड	उत्तराखंड
सातताल	उत्तराखंड
सांभर	राजस्थान
उदयसागर	राजस्थान
जयसमंद	राजस्थान
डिंडवाना	राजस्थान
फतेहसागर	राजस्थान
राजसमंद	राजस्थान
चिल्का	ओडिशा
वुलर	जम्मू-कश्मीर
मानस	जम्मू-कश्मीर
नागिन	जम्मू-कश्मीर
शेषनाग	जम्मू-कश्मीर
डल	जम्मू-कश्मीर
लोनार	महाराष्ट्र
सूरजकुंड	हरियाणा
पुलीकट	तमिलनाडु व आंध्रप्रदेश
हमीरसर	गुजरात
फुल्हर	उत्तर प्रदेश
कोलेरु	आंध्रप्रदेश
लोकटक	मणिपुर

धुआंधार जल प्रपात	नर्मदा नदी/ मध्यप्रदेश
शिव समुन्द्रम जल प्रपात	कावेरी नदी
गोकक जल प्रपात	कृष्णा नदी के सहायक नदी गोकक नदी
हुण्डरु जल प्रपात	स्वर्ण रेखा नदी
कपिल धारा जल प्रपात	नर्मदा नदी /मध्यप्रदेश
दूध सागर जल प्रपात	माण्डवी नदी /गोवा
चूलिया जल प्रपात	चम्बल नदी
चित्र कूट जल प्रपात	इन्द्रावती नदी
विरदी जल प्रपात	उत्तराखंड में
येना जल प्रपात	महाबलेश्वर के पास
वसुंधरा जल प्रपात	अलकनंदा नदी
पायकार जल प्रपात	पायकारा नदी
माधर जल प्रपात	नर्मदा नदी
कुंचीकुल जल प्रपात	वारही नदी ((शिर्मोंग)
बारहपानी जल प्रपात	बुद्ध बालंगा नदी ((मयूरभंज)
थोसेबर जल प्रपात	सतारा(महाराष्ट्र)

➤ प्रमुख जल प्रपात

जल प्रपात	नदी /राज्य
गरसोप्पा या जोग जल प्रपात	शरावती नदी

विश्व भूगोल

• ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल

- ब्रह्माण्ड का अध्ययन खगोलिकी कहलाता है।
- महाविस्फोट सिद्धांत (big-bang theory) ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से संबंधित है।
- ब्रह्माण्ड दिखाई पड़ने वाले समस्त आकाशीय पिंड को ब्रह्माण्ड कहते हैं। ब्रह्माण्ड विस्तारित हो रहा है ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक संख्या तारों की है।

तारा

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास अपनी ऊष्मा तथा प्रकाश हो तारा कहलाता है।
- तारा बनने से पहले विरल गैस का गोला होता है।
- जब ये विरल गैस केंद्रित होकर पास आ जाते हैं तो घने बादल के समान हो जाते हैं जिन्हें निहारिका कहते हैं।
- जब इन नेबुला में सलयनविधि द्वारा दहन की क्रिया प्रारंभ हो जाती है तो वह तारों का रूप ले लेता है।
- तारों में हाइड्रोजन का सलयन हिलियम में होता रहता है। तारों में इंधन प्लाज्मा अवस्था में होता है।
- तारों का रंग उसके पृष्ठ ताप पर निर्भर करता है।
- लाल रंग - निम्न ताप (6 हजार डिग्री सेल्सियस)
- सफेद रंग - मध्यम ताप
- नीला रंग - उच्च ताप
- तारों का भविष्य उसके प्रारंभिक द्रव्यमान पर निर्भर करता है।
- जब तारा सूर्य का इंधन समाप्त होने लगता है तो वह लाल दानव का रूप ले लेता है और लाल दानव का आकार बड़ा होने लगता है।
- यदि लाल दानवों का द्रव्यमान सूर्य के द्रव्यमान के 1.44 गुना से छोटा होता है तो वह श्वेत वामन बनेगा।

सौर मंडल

- सूर्य तथा उसके आसपास के ग्रह, उपग्रह तथा शुद्ध ग्रह, धूमकेतु, उल्कापिंड उनके संयुक्त समूह को सौरमंडल कहते हैं।
- सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है।
- सौरमंडल में जनक तारा के रूप में सूर्य है।
- सौर मंडल के सभी पिंड सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

सूर्य

- यह हमारा सबसे निकटतम तारा है सूर्य सौरमंडल के बीच में स्थित है। सूर्य की आयु लगभग 15 अरब वर्ष है जिसमें से वह 5 अरब वर्ष जि चुका है।
- सूर्य के अंदर हाइड्रोजन का हिलियम में संलयन होता है और इंधन प्लाज्मा अवस्था में रहता है।
- आंतरिक संरचना के आधार पर सूर्य को तीन भागों में बांटते हैं।

सूर्य की बाहरी परत

- सूर्य के बाहर उसकी तीन परतें हैं।
- 1. प्रकाश मंडल
 - यह सूर्य का दिखाई देने वाला भाग है इसका तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस होता है।
- 2. वरुण मंडल
 - यह बाहरी परत के आधार पर मध्य भाग है इसका तापमान 32400 डिग्री सेल्सियस होता है।
- 3. (corona)
 - यह सूर्य का सबसे बाहरी परत होता है जो लपट के समान होता है इसे केवल सूर्य ग्रहण के समय देखा जाता है इसका तापमान 27lac डिग्री सेल्सियस होता है।
 - सूर्य में 75% हाइड्रोजन तथा 24% हिलियम है।
 - शेष तत्व की मात्रा 1% में ही निहित है।
 - सूर्य का द्रव्यमान पृथ्वी से 332000 गुना है।
 - सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुना है।
 - सूर्य का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से 28 गुना है।
 - सूर्य का घनत्व पृथ्वी से 20 गुना है।
 - सूर्य से प्रति सेकंड 10^{26} जूल ऊर्जा निकलती है।
 - सूर्य पश्चिम से पूरब घूर्णन करता है।
 - सूर्य का विषुवत रेखीय भाग 25 दिन में घूर्णन कर लेता है।
 - सूर्य का ध्रुवीय भाग 31 दिन में घूर्णन कर लेता है।

ग्रह

- वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास ना अपनी ऊष्मा हो और ना ही अपना प्रकाश हो वह ऊष्मा तथा प्रकाश के लिए अपने निकटतम तारे पर आश्रित होता तथा उसी का चक्कर लगाता हो प्रारंभ मे ग्रहों कि संख्या 9 थी परंतु वर्तमान में 8 ग्रह है ग्रहों को 2 श्रृणियों में बांटते हैं।

पार्थिव

- इन्हें आंतरिक ग्रह भी कहते हैं।

- यह पृथ्वी से समानता रखते हैं।
- इनका घनत्व अधिक होता है तथा यह ठोस अवस्था में होते हैं।
- इनके उपग्रह कम होते हैं या होते ही नहीं हैं इन ग्रहों की संख्या चार होती है।

- बुध
- शुक्र
- पृथ्वी
- मंगल

जोवियन ग्रह

- इसे बाह्य ग्रह कहते हैं। यह बृहस्पति से समानता रखते हैं। इनका आकार बड़ा होता है किन्तु घनत्व कम होता है, यह गैस की अवस्था में पाए जाते हैं। इनके उपग्रहों की संख्या अधिक है।

प्लूटो

- यह नौवां ग्रह था। किन्तु 24 अगस्त 2006 को चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में अंतरराष्ट्रीय खगोल खंड की बैठक हुई जिसमें प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालकर बौना ग्रह में डाल दिया।
- प्लूटो को ग्रह की श्रेणी से निकालने के तीन कारण थे
 1. इसका आकार अत्यधिक छोटा था
 2. इसकी कक्षा दीर्घ वर्तनी नहीं थी
 3. इसकी कक्षा वरुण की कक्षा को काटती थी

उपग्रह

- इनके पास ऊष्मा और प्रकाश दोनों नहीं था।
- यह अपने निकटतम तारे से ऊष्मा और प्रकाश लेते हैं किन्तु यह चक्कर अपने निकटतम ग्रह का लगाते हैं।

उपग्रह दो प्रकार के होते हैं

1. प्राकृतिक उपग्रह - चंद्रमा
2. कृत्रिम उपग्रह - यह मानव निर्मित होते हैं संचार तथा मौसम की भविष्यवाणी करता है।
सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रह
 1. बुध
 2. पृथ्वी
 3. बृहस्पति
 4. अरुण
 5. शुक्र
 6. मंगल

7. शनि
8. वरुण

पृथ्वी से दूरी के अनुसार

1. शुक्र
2. मंगल
3. बुध
4. बृहस्पति
5. शनि
6. अरुण
7. वरुण

आकार के अनुसार ग्रह

1. बृहस्पति
2. शनि
3. अरुण
4. वरुण
5. पृथ्वी
6. शुक्र
7. मंगल
8. बुध

आंखों से हम पांच ग्रहों को देख सकते हैं।

1. बुध
2. शुक्र
3. मंगल
4. बृहस्पति
5. शनि

उल्टा घूमने वाले ग्रह पूरब से पश्चिम

- शुक्र तथा अरुण
- सर्वाधिक घनत्व पृथ्वी का तथा कम घनत्व शनि का।
- सबसे बड़ा उपग्रह बृहस्पति का गेनीमेड और सबसे छोटा उपग्रह मंगल का डिमोस है।
- सबसे तेज घूर्णन बृहस्पति सबसे धीमा घूर्णन शुक्र 249 दिन।
- सबसे तेज परिक्रमण वर्ष की अवधि बुध 88 दिन सबसे धीमा शुक्र 164 साल।
- सबसे गर्म ग्रह शुक्र सबसे ठंडा ग्रह अरुण वरुण है।

Gold lock zone

- अंतरिक्ष का वह स्थान जहां जीवन की संभावना पाई जाती है उसे गोल्डी लॉक्स जोन कहते हैं।

- केवल पृथ्वी पर जीवन संभव है ।
- मंगल पर इसकी संभावना है ।
- जीवन की उत्पत्ति के लिए कपास का पौधा अंतरिक्ष पर भेजा गया ।

बुध ग्रह (मरकरी)

- इसका नामकरण रोमन संदेशवाहक देवता के नाम पर हुआ है ।
- इस ग्रह का वायुमंडल नहीं है किन्तु बहुत ही कम मात्रा में वहां ऑक्सीजन पाई जाती है ।
- वायुमंडल ना होने के कारण यह ऊष्मा को रोक नहीं पाता है । जिस कारण दिन में इसका तापमान 420 डिग्री सेल्सियस तथा रात को -180 डिग्री सेल्सियस तापमान हो जाता है अर्थात इस ग्रह पर सर्वाधिक तापांतर 600 डिग्री सेल्सियस का देखा जाता है अतः यहां जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है ।
- वायुमंडल ना होने के कारण इस ग्रह पर सर्वाधिक उल्का पात हुआ है ।
- सबसे बड़ा क्रेटर कोरोलिस बेलिस है ।

शुक्र

- इस ग्रह पर सर्वाधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड पाया जाता है ।
- यह सूर्य से आने वाली सभी ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है
- इसे सबसे गर्म तथा चमकीला ग्रह कहते हैं ।
- इसे सौरमंडल की परी कहते हैं
- इस पर प्रेशर कुकर के समान स्थिति पाई जाती है जिस कारण इसे दम घुटने वाला कहते हैं ।
- यह पृथ्वी से समानता रखता है अतः इसे पृथ्वी का सहोदर ,भगिनी ,जुड़वा बहन कहते हैं ।
- यह अपने अक्ष पर उल्टा अर्थात पूर्व से पश्चिम घूमता है जिस कारण यहां सूर्योदय पश्चिम में होता है ।
- यह अपने अक्ष पर 243 दिन में घूर्णन कर लेता है । जबकि सूर्य का परिक्रमण 224 दिन में पूरा करता है ।
- अर्थात इस ग्रह का घूर्णन और परिक्रमण समान है।
- अर्थात इस ग्रह पर एक दिन । वर्ष के बराबर होगा ।
- बुध तथा शुक्र के पास उपग्रह नहीं है इसके उपग्रह को सूर्य खींच लेता है।

भोर तथा सांझ का तारा

- भोर तथा सांझ में प्रकाश काम रहता है । इसी कारण सूर्य से जब प्रकाश आता है तो बुध तथा शुक्र से टकराकर परिवर्तित होता है ।
- इस परिवर्तित प्रकाश के कारण बुध तथा शुक्र चमकीले दिखते हैं जिससे शुक्र निकट होने के कारण अधिक चमकीला दिखता है ।
- बुध एवं शुक्र दोनों को भोर तथा सांझ का तारा कहते हैं ।

मंगल

- इस पर Iron ऑक्साइड की अधिकता है । जिस कारण यह लाल दिखता है
- यह 25 डिग्री पर झुका हुआ है । जिस कारण इस पर पृथ्वी के समान ऋतु परिवर्तन देकर जाते हैं ।
- इस ग्रह पर जीवन की संभावना सर्वाधिक है ।
- इस ग्रह पर पूरे सौरमंडल का सबसे ऊंचा पर्वत मिक्स ओलंपिया है जिसकी ऊंचाई 30000 किलोमीटर है जो माउंट एवरेस्ट के 3 गुना से भी अधिक ऊंचा है ।

बृहस्पति

- यह सबसे बड़ा ग्रह है , किन्तु यह गैसीय अवस्था में है ।
- इस पर सल्फर डाइऑक्साइड की अधिकता है जिस कारण यह हल्का पीला दिखता है।
- यह एकमात्र ग्रह है जो हिमरहित है।
- यह अपने अक्ष पर सबसे तेज घूर्णन करता है । जो लगभग 9:30 घंटे में पूरा कर लेता है।
- बृहस्पति के 73 उपग्रहों में से केवल 16 उपग्रहों को ही मान्यता प्राप्त है।
- इसका सबसे बड़ा उपग्रह गेनीमेड है।
- बृहस्पति के अत्यधिक विशालता के कारण इसे तारा सदृश्य ग्रह कहते हैं।

शनि ग्रह

- यह सबसे कम घनत्व वाला ग्रह है ।
- इसका घनत्व $.7gm/cm^3$ है ।
- कम घनत्व के कारण यह ह पानी में नहीं डूबेगा इस ग्रह के चारों ओर 7 छल्ले हैं ।
- जिन्हें ए ,बी ,सी, डी, ई ,एफ ,जी कहते हैं ।यह वलय इसी ग्रह का टुकड़ा है जो शनि के गुरुत्वाकर्षण के कारण इसी के समीप रहता है
- इन छल्लों के कारण ही शनि को आकाशगंगा सदृश्य ग्रह कहते हैं ।

अध्याय - 2

संविधान सभा

- भारत में संविधान सभा के गठन का विचार वर्ष 1934 में पहली बार एम. एन. राय ने रखा।
- 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहली बार भारत के संविधान निर्माण के लिए आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की मांग की।
- 1938 में जवाहर लाल नेहरू ने घोषणा की स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई संविधान सभा द्वारा किया जायेगा। नेहरू की इस मांग को ब्रिटिश सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया। इसे 1940 के अगस्त प्रस्ताव के रूप में जाना जाता है।
- क्रिप्स मिशन 1946 में भारत आया।

क्रिप्स मिशन

- लॉर्ड सर पैथिक लॉरेंस (अध्यक्ष)
- ए. वी. अलेक्जेंडर
- सर स्टेफोर्ड क्रिप्स
- 1946 ई. को ब्रिटेन के प्रधान मंत्री क्लिमेंट एटली ने ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन सदस्य (सर स्टेफोर्ड क्रिप्स, लॉर्ड पैथिक लॉरेंस तथा ए. वी. अलेक्जेंडर) को भारत भेजा जिसे कैबिनेट मिशन कहा गया।
- कैबिनेट का मुख्य कार्य संविधान सभा का गठन कर भारतीयों द्वारा अपना संविधान बनाने का कार्य करना था।
- भारत में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में अंतरिम सरकार का गठन कैबिनेट मिशन योजना के तहत किया गया था। अंतरिम मंत्रिमंडल अंग इस प्रकार था।

अंतरिम सरकार

जवाहर लाल नेहरू - स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रिमंडल (1947)

सरदार वल्लभभाई पटेल - गृह, सूचना एवं प्रसारण

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद - खाद्य एवं कृषि

जॉन मथाई - उद्योग एवं नागरिक आपूर्ति

जगजीवन राम - श्रम

सरदार बलदेव सिंह - रक्षा

सी. एच. भाभा - कार्य, खान एवं ऊर्जा

लियाकत अली खां - वित्त

अब्दुर ख़ान निश्तार - डाक एवं वायु

आसफ अली - रेलवे एवं परिवहन

सी. राजगोपालाचारी	-	शिक्षा एवं कला
आई. आई. चुंदरीगर	-	वाणिज्य
गजनफर अली खान	-	स्वास्थ्य
जोगेंद्र नाथ मंडल	-	विधि

- कैबिनेट मिशन द्वारा प्रस्तुत किए गए सुझावों के अनुसार नवंबर 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ। मिशन की योजना के अनुसार संविधान सभा का स्वरूप निम्नलिखित प्रकार का होना था -
- संविधान सभा के कुल सदस्यों की संख्या 389 होनी थी। इनमें से 296 सीटें ब्रिटिश भारत के प्रांतों को और 93 सीटें देशी रियासतों को दी जानी थी।
- हर ब्रिटिश प्रांत एवं देशी रियासत को उसकी जनसंख्या के अनुपात में सीटें दी जानी थी। आमतौर पर प्रत्येक 10 लाख लोगों पर एक सीट का आवंटन होना था।
- प्रत्येक ब्रिटिश प्रांत को दी गई सीटों का निर्धारण तीन प्रमुख समुदायों के मध्य उनकी जनसंख्या के अनुपात में किया जाना था। यह तीन समुदाय थे :- मुस्लिम, सिख व सामान्य (मुस्लिम और सिख को छोड़कर)।
- देशी रियासतों के प्रतिनिधियों का चयन चुनाव द्वारा नहीं, बल्कि रियासत के प्रमुखों द्वारा किया जाना था।
- कैबिनेट योजना के अनुसार ब्रिटिश भारत के लिए आवंटित 296 सीटों के लिए चुनाव जुलाई-अगस्त 1946 में संपन्न हुए।
- इस चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 तथा छोटे दलों व निर्दलीय सदस्यों को 15 सीटें मिली।
- महात्मा गांधी और मोहम्मद अली जिन्ना को छोड़ दे तो संविधान सभा में उस समय के भारत के सभी प्रसिद्ध व्यक्तित्व शामिल थे।
- 9 दिसम्बर 1946 ई. को संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई जिसमें मुस्लिम लीग ने भाग नहीं लिया।
- संविधान सभा का अधिवेशन 9 दिसम्बर 1946 को कन्द्रीय कक्ष में संपन्न हुआ। डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को सर्व सम्मति से संविधान सभा का अस्थायी अध्यक्ष चुन लिया गया।
- 11 दिसम्बर 1946 ई. को कांग्रेस के नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जो की अन्त तक इसके अध्यक्ष बने रहे।

उद्देश्य प्रस्ताव :-

- 13 दिसम्बर 1946 को जवाहरलाल नेहरू ने सभा में उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को वर्तमान संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में हुई। मुस्लिम लीग ने इस बैठक का बहिष्कार किया और अलग पाकिस्तान की मांग उठाई।
- सभा के सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ सच्चिदानंद सिन्हा को सभा का अस्थाई अध्यक्ष बनाया गया।
- 2 दिन पश्चात 11 दिसंबर 1946 को डॉ राजेंद्र प्रसाद को सभा का स्थाई अध्यक्ष बनाया गया, जो 22 जनवरी 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया। संक्षेप में इस प्रस्ताव की मुख्य बातें निम्नलिखित थी :-
- भारत को एक स्वतंत्र तथा संप्रभु गणराज्य के रूप में स्थापित किया जाए।
- भारत के समस्त नागरिक को विचार, अभिव्यक्ति, संस्था बनाने, कोई व्यवसाय करने, किसी भी धर्म को मानने या न मानने कि स्वतंत्रता होगी।
- अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों तथा पिछड़े वर्गों के हितों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त रक्षा के उपाय किए जाएंगे।
- देश की एकता को स्थायित्व प्रदान किया जाएगा।
- यही उद्देश्य प्रस्ताव संविधान की 'प्रस्तावना' का आधार बना और इसी ने संपूर्ण संविधान के दर्शन को मूर्त रूप प्रदान किया।

संविधान सभा की कार्य प्रणाली

- अस्थायी अध्यक्ष - सच्चिदानंद सिन्हा
अध्यक्ष - डा. राजेन्द्र प्रसाद
उपाध्यक्ष - डा. एच. सी मुखर्जी, व
वी.टी. कृष्णामाचारी

संविधान सभा के अन्य कार्य

- मई 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता।
- 22 जुलाई 1947 को राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया।
- 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रगान को अपनाया।
- 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय गीत को अपनाया।
- 24 जनवरी 1950 को राजेन्द्र प्रसाद को भारत के पहले राष्ट्रपति चुनना।
- 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में कुल 11 बैठके हुई, लगभग 60 देशों का संविधान का अवलोकन, इसके प्रारूप पर 114 दिन तक विचार हुआ कुल खर्च 64 लाख रुपया आया।
- 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा की अन्तिम बैठक हुई।

संविधान सभा की समितियां

- संघ शक्ति समिति - जवाहर लाल नेहरू
संघीय संविधान समिति - जवाहरलाल नेहरू
प्रांतीय संविधान समिति - सरदार वल्लभ भाई पटेल
प्रारूप समिति - डॉ. बी. आर. अंबेडकर
मौलिक अधिकारी, अल्पसंख्यकों एवं जनजातियों तथा बहिष्कृत क्षेत्रों के लिए सलाहकार समिति - सरदार पटेल
प्रक्रिया नियम समिति - डॉ. राजेंद्र प्रसाद
राज्यों के लिए समिति - जवाहरलाल नेहरू
संचालन समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

प्रारूप समिति

- अम्बेडकर (अध्यक्ष)
- एन गोपालस्वामी आयंगर
- अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर
- डॉ. के. एम मुंशी
- सैयद मोहम्मद सादुल्ला
- एन. माधव राव (बी. एल. मिल की जगह)
- टी. टी. कृष्णामाचारी (डी.पी खेतान की जगह)
- 4 नवम्बर 1948 को अंबेडकर ने सभा में संविधान का अन्तिम प्रारूप पेश किया गया। इस बार संविधान पहली बार पढ़ा गया।
- संविधान सभा के 299 सदस्यों में से 284 लोगों ने संविधान पर हस्ताक्षर किया।
- 26 नवम्बर 1949 को अपनाए गये संविधान में प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद व 8 अनुसूचियां थी। संविधान सभा द्वारा हाथी का प्रतीक (मुहर) के रूप में अपनाया।
- सर वी० एन. राव संवैधानिक सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया था।

संविधान निर्माण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण व्यक्ति

- एच. वी. आर अयंगर (सचिव)
- एल.एन. मुखर्जी (चीफ इफ्टमैन)
- प्रेम बिहारी नारायण (सुलेखक)
- मंदलाल बोस और विउहर (मूल संस्करण का सजावट और सौन्दर्यीकरण)
- संविधान सभा में अम्बेडकर का पहली बार निर्वाचन बंगाल से तथा देश बंटवारे के बाद उनका निर्वाचन बॉम्बे से हुआ।

अध्याय - 18

नीति आयोग

- नीति आयोग (राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्थान) भारत सरकार द्वारा गठित एक नई संस्थान है, जिसे योजना आयोग के स्थान पर बनाया गया है।
- इस संस्थान ने एक जनवरी 2015 से एक कार्य करना प्रारंभ किया है। यह संस्थान सरकार के थिंक टैंक के रूप में सेवाएं प्रदान करेगा और उसे निर्देशात्मक एवं नीतिगत गतिशीलता प्रदान करेगा।

नीति आयोग की संरचना

- नीति आयोग की संरचना इस प्रकार है
 - भारत के प्रधानमंत्री अध्यक्ष।
 - गवर्निंग काउंसिल में राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों (जिन केंद्र शासित प्रदेशों में विधानसभा है, वहां के मुख्यमंत्री) के उपराज्यपाल शामिल होंगे।
 - विशिष्ट मुद्दों और ऐसे आकस्मिक मामले जिनका संबंध एक से अधिक राज्य या क्षेत्र से हो, को देखने के लिए क्षेत्रीय परिषद गठित की जाएगी। यह परिषदें विशिष्ट कार्यकाल के लिए बनाई जाएंगी। भारत के प्रधानमंत्री के निर्देश पर क्षेत्रीय परिषदों की बैठक होगी। और इनमें संबंधित क्षेत्र के राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल शामिल होंगे (उनकी अध्यक्षता नीति आयोग के उपाध्यक्ष करेंगे)
 - संबंधित कार्य क्षेत्र की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञ और कार्यरत लोग विशेष आमंत्रित के रूप में प्रधानमंत्री द्वारा नामित किए जाएंगे।

पूर्णकालिक संगठनात्मक ढांचे में (प्रधानमंत्री अध्यक्ष होने के अलावा) निम्न होंगे

- (1). उपाध्यक्ष: प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त।
 - (2). सदस्य: पूर्णकालिक
 - (3). अंशकालिक सदस्य: अग्रणी विश्वविद्यालयों में शोध संस्थानों और संबंधित संस्थानों से अधिकतम दो पदेन सदस्य अंशकालिक सदस्य क्रमानुसार होंगे।
 - (4). पदेन सदस्य: केंद्रीय मंत्री परिषद से अधिकतम चार सदस्य प्रधानमंत्री द्वारा नामित होंगे। यदि बारी के आधार को प्राथमिकता दी जाती है तो यह नियुक्ति विशिष्ट कार्यकाल के लिए होगी।
- राष्ट्रीय विकास परिषद की स्थापना अगस्त 1954 में की गई थी
 - नीति आयोग गैर-संवैधानिक निकाय है।

नीति आयोग के वर्तमान सदस्य :-

पद	नाम
अध्यक्ष	श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री
उपाध्यक्ष	डॉ राजीव कुमार
मुख्य कार्यकारी	अभिधाभ कांत (CEO)
पूर्णकालिक सदस्य	रमेश चंद्र, बी.के. सारस्वत, डॉ वी.के. पाल
पदेन सदस्य	श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री

भारत के वित्त आयोग

क्र.सं.	गठन	अध्यक्ष का नाम	अनुशांसा वर्ष
पहला	1951	के.सी.नियोगी	1952-57
दूसरा	1956	के. संथानम	1957-62
तीसरा	1960	ए.के. चंद्रा	1962-66

विविध

• महत्वपूर्ण दिवस

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवस 2021

जनवरी	समारोह की तिथि
प्रवासी भारतीय दिवस	09 जनवरी
राष्ट्रीय युवा दिवस	12 जनवरी
सड़क सुरक्षा सप्ताह	11 - 17 जनवरी
सेना दिवस	15 जनवरी
राष्ट्रीय बालिका दिवस	24 जनवरी
सुभाष चन्द्र का जन्मदिन	23 जनवरी
गणतंत्र दिवस - 26 जनवरी	26 जनवरी
शहीद दिवस	30 जनवरी
फरवरी	समारोह की तिथि
विश्व कैंसर दिवस	4 फरवरी
वेलेटाइन्स डे	14 फरवरी
संत रविदास जयंती	27 फरवरी
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी
मार्च	समारोह की तिथि
राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस	4 मार्च
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	8 मार्च
ऑर्डिनेंस फैक्ट्री डे	18 मार्च
विश्व जल दिवस	22 मार्च
शहीद दिवस	23 मार्च and 30 जनवरी
अप्रैल	समारोह की तिथि
विश्व स्वास्थ्य दिवस	7 अप्रैल

जलियांवाला बाग नरसंहार	13 अप्रैल
अम्बेडकर जयंती	14 अप्रैल
विश्व पृथ्वी दिवस	22 अप्रैल
विश्व पुस्तक दिवस	23 अप्रैल
मई	समारोह की तिथि
अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस	1 मई
विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस	3 मई
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस	11 मई
मातृ दिवस	09 मई
अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस	15 मई
विश्व तम्बाकू निषेध दिवस	31 मई
जून	समारोह की तिथि
विश्व दुग्ध दिवस	1 जून
विश्व पर्यावरण दिवस	5 जून
विश्व रक्त दाता दिवस	14 जून
अंतरराष्ट्रीय योग दिवस	21 जून
दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस	26 जून
जुलाई	समारोह की तिथि
राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस	1 जुलाई
विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
अगस्त	समारोह की तिथि
अंगदान दिवस	13 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
अंतरराष्ट्रीय फोटोग्राफी दिवस	19 अगस्त

• भारत के प्रमुख खेल

राष्ट्रमंडल खेल

- ❖ राष्ट्रमंडल खेल की कल्पना सन् 1891 में एक अंग्रेज "जे. एस्ले कपूर" ने की थी।
- ❖ राष्ट्रमंडल खेलों की शुरुआत 1930ई. में हेमिल्टन(बरमूडा) में हुई थी।
- ❖ राष्ट्रमंडल खेल का नाम ब्रिटिश साम्राज्य तथा सन् 1954 राष्ट्रमंडल खेल रखा गया।
- ❖ सन् 1908 के ओलम्पिक के बाद रिचर्ड कूम्बस नामक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक के द्वारा उसके सुझाव को मंजूरी दे दी गई।
- ❖ 1934ई. में लंदन में होने वाले दूसरे राष्ट्रमंडल खेल में भारत ने पहली बार भाग लिया था।
- ❖ राष्ट्रमंडल खेल प्रत्येक चार वर्षों पर दो ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेलों के बीच में होता है।
- ❖ राष्ट्रमंडल खेल कभी भी लगातार एक ही देश में नहीं होते हैं।
- ❖ राष्ट्रमंडल खेल में राष्ट्रमंडल के सदस्य देशों की टीम में भाग ले सकते हैं।

एशियाई खेल

- सन् 1947 में नई दिल्ली में एशियाई देशों के सम्मलेन में एशियाई देशों की अन्तर्राष्ट्रीय खेलों की स्पर्धा हर चार वर्ष पर आयोजित करने की योजना बनायी गई।
- प्रो. जी.डी. सोढी को इस प्रस्ताव का श्रेय जाता है, जिनका उद्देश्य खेलों के माध्यम से एशियाई देशों को एक-साथ करना था।
- एशियाई खेल संघ ने चमकते सूर्य को अपना प्रतीक चिह्न घोषित किया।
- पहले एशियाई खेलों की प्रतियोगिता का उद्घाटन 4 मार्च, 1951 को नई दिल्ली में हुआ था।

क्रिकेट

- ❖ क्रिकेट खेल की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्वी इंग्लैण्ड में हुई मानी जाती है।
- ❖ इंग्लैण्ड मेलबर्न क्रिकेट क्लब की स्थापना 1787 ई. में हुई।
- ❖ भारत में कलकत्ता क्रिकेट क्लब की स्थापना 1792 ई. में हुई।
- ❖ इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की स्थापना इम्पीरियल कॉन्फ्रेंस के रूप में 1909 ई. में हुई थी, जिसे बाद में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस नाम दिया गया।
- ❖ खिलाड़ियों की संख्या 11 होती है।

- ❖ **राष्ट्रीय खेल-** 1. इंग्लैण्ड, 2. ऑस्ट्रेलिया।
- ❖ **माप-** 1. बॉल- 155.9 ग्राम से 163 ग्राम,
- ❖ **बल्ला-** लम्बाई 96.5 सेमी., चौड़ाई अधिकतम 10.8 सेमी.,
- 2. पिच- 20.12 मीटर

विश्व कप क्रिकेट-

क्र. सं.	वर्ष	मेजबान देश	विजेता	उपविजेता
1.	1975	इंग्लैण्ड	वेस्टइंडीज	ऑस्ट्रेलिया
2.	1979	इंग्लैण्ड	वेस्टइंडीज	इंग्लैण्ड
3.	1983	इंग्लैण्ड	भारत	वेस्टइंडीज
4.	1987	भारत-पाकिस्तान	ऑस्ट्रेलिया	इंग्लैण्ड
5.	1992	ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैण्ड	पाकिस्तान	इंग्लैण्ड
6.	1996	भारत-पाकिस्तान-श्रीलंका	श्रीलंका	ऑस्ट्रेलिया
7.	1999	इंग्लैण्ड	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्तान
8.	2003	दक्षिण अफ्रीका	ऑस्ट्रेलिया	भारत
9.	2007	वेस्टइंडीज	ऑस्ट्रेलिया	श्रीलंका
10.	2011	भारत-श्रीलंका-बांग्लादेश	भारत	श्रीलंका
11.	2015	न्यूजीलैण्ड-ऑस्ट्रेलिया	ऑस्ट्रेलिया	न्यूजीलैण्ड
12.	2019	इंग्लैण्ड	इंग्लैण्ड	न्यूजीलैण्ड

हॉकी

- ❖ हॉकी के वर्तमान स्वरूप का जन्म इंग्लैण्ड में 19वीं शताब्दी के मध्य में हुआ था।
- ❖ हॉकी क्लब की स्थापना 'ब्लैकहीथ' के नाम से पहले हुई थी, 1861 ई. में।
- ❖ हॉकी खेल के नियम विम्बल्डन हॉकी क्लब द्वारा बनाए गए, जिसे 1886 में हॉकी एसोसिएशन ने अपना लिया।

- ❖ हॉकी का पहला अन्तर्राष्ट्रीय मैच इंग्लैंड तथा आयरलैंड के बीच 1895 ई. में खेला गया।
- ❖ हॉकी को ओलम्पिक खेल में 1908 में शामिल किया गया।
- ❖ भारत में हॉकी का पहला क्लब 1885-86 में बना।
- ❖ भारत ने पहला ओलम्पिक हॉकी मैच 1928 में खेला था।
- ❖ खिलाड़ियों की संख्या 11 होती है।
- ❖ राष्ट्रीय खेल- 1. भारत, 2. पाकिस्तान।
- ❖ माप- 1. मैदान- 100 गज × 60 गज, 2. बॉल- 5.5 औंस से 5.75 औंस तक (भार)।

○ विश्व कप हॉकी-

क्र. सं.	आयोजन वर्ष	आयोजन स्थल	विजेता	उपविजेता
1.	1971	बार्सीलोना	पाकिस्तान	स्पेन
2.	1973	एम्सटर्डम	हॉलैंड	भारत
3.	1975	कुआलालम्पुर	भारत	पाकिस्तान
4.	1978	ब्यूनस आयर्स	पाकिस्तान	हॉलैंड
5.	1982	मुम्बई	पाकिस्तान	प. जर्मनी
6.	1986	लंदन	ऑस्ट्रेलिया	इंग्लैंड
7.	1990	लाहौर	हॉलैंड	पाकिस्तान
8.	1994	सिडनी	पाकिस्तान	हॉलैंड
9.	1998	यूट्रेक्ट	नीदरलैंड	स्पेन
10.	2002	कुआलालम्पुर	जर्मनी	ऑस्ट्रेलिया
11.	2006	जर्मनी	जर्मनी	ऑस्ट्रेलिया
12.	2010	नई दिल्ली	ऑस्ट्रेलिया	जर्मनी
13.	2014	द हेग	ऑस्ट्रेलिया	नीदरलैंड

14.	2018	भुवनेश्वर	बेल्जियम	नीदरलैंड
15.	2023	भुवनेश्वर और राउरकेला	-	-

फुटबॉल

- ❖ ब्रिटेन में फुटबॉल की शुरुआत रोमनों ने की थी।
- ❖ प्राचीन रोमनों ने फुटबॉल के खेल को अपनी सेना में शामिल किया था।
- ❖ फुटबॉल पहली सदी के आसपास चीन में खेला जाता था।
- ❖ फेडरेशन इंटरनेशनल डी फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा) की स्थापना 1904 ई. में सात यूरोपीय देशों ने मिलकर की।
- ❖ 1846 में फुटबॉल खेल के नियमों को परिभाषित करने के लिए एक आदर्श संहिता इंग्लैंड में बनाई गई।
- ❖ फीफा का मुख्यालय स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में है।
- ❖ फीफा प्रत्येक चार वर्षों में फुटबॉल के विश्व कप का आयोजन करवाती है।
- ❖ फुटबॉल खेल के नियम इंटरनेशनल फुटबॉल एसोसिएशन बोर्ड (आई.एफ.ए.बी.) बनाती है, जिसमें फीफा के सदस्य भी रहते हैं।
- ❖ माप- 1. मैदान का माप- 100 मीटर × 64 मीटर से 110 मीटर × 75 मीटर तक
2. गेंद का वजन- 396 ग्राम से 453 ग्राम,
3. गेंद का आंतरिक दाब- 60 ग्राम/सेमी² से 110 ग्राम/सेमी²
4. गेंद की परिधि- 68 से 71 सेमी।
- ❖ खिलाड़ियों की संख्या- 11

○ विश्व कप फुटबॉल

क्र. सं.	आयोजन वर्ष	स्थान	विजेता	उपविजेता
1.	1930	उरुग्वे	उरुग्वे	अर्जेंटीना
2.	1934	इटली (रोम)	इटली	चेकोस्लोवाकिया
3.	1938	पेरिस (फ्रांस)	इटली	हंगरी
4.	1950	ब्राज़ील	उरुग्वे	ब्राज़ील
5.	1954	स्विट्जरलैंड	प. जर्मनी	हंगरी
6.	1958	स्वीडन	ब्राज़ील	स्वीडन

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gzfJyt6vl>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

whatsa pp-<https://wa.link/ij0u1e> 1 web.- <https://bit.ly/ssc-cpo-notes>

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें



Whatsapp - <https://wa.link/ij0u1e>

Online order - <https://bit.ly/ssc-cpo-notes>

Call करें - 9887809083

whatsa pp-<https://wa.link/ij0u1e> 2 web.- <https://bit.ly/ssc-cpo-notes>